हो जायगा। जैसे-जैसे प्रभुत्व-कामना क्षीण होगी, वैसे,वैसे ही वह अलौकिक अनिर्वचनीय सुख का आस्वादन करेगा। एक वैदिक मंत्र में उल्लेख है कि श्रीभगवान् के संग में वह जैसे-जैसे तत्त्व को जानता जाता है, वैसे ही अपने सच्चिदानन्दमय जीवन का आस्वादन करता है।

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।।२३।।

उपद्रष्टा=साक्षी; **अनुमन्ता**=अनुमति देने वाला; **च**=तथा; **भर्ता**=स्वामी **भोक्ता**=परम भोक्ता; **महेश्वरः**=परम ईश्वर; **परमात्मा**=परमात्मा; **इति**=भी; **च**=तथा; **अपि**=भी; **उक्तः**=कहा जाता है; **देहे**=देह में; **अस्मिन्**=इस; **पुरुषः**=भोक्ता; **परः**=परम।

अनुवाद

इस देह में जीव के साथ एक परात्पर भोक्ता भी है, जो सब का परम ईश्वर, साक्षी और अनुमति देने वाला है और जो परमात्मा कहलाता है।।२३।।

तात्पर्य

भाव यह है कि जीवात्मा का नित्य सहचर परमात्मा श्रीपरमेश्वर का ही रूप है वह साधारण जीव के तुल्य नहीं है। अद्वैतवादियों की धारणा में क्षेत्रज्ञ एक है। इसी से वे यह समझते हैं कि जीवात्मा और परमात्मा में कुछ भेद नहीं है। इस विषय को स्पष्ट करने के उद्देश्य से श्रीभगवान् ने कहा है कि प्रत्येक देह में परमात्मा उनका रूप है। यह जीवात्मा से भिन्न, **पर** अर्थात् लोकोत्तर है। जीव-क्षेत्रज्ञ किसी एक क्षेत्र के कार्य-कलाप को ही भोगता है, जबकि परमात्मा बद्ध-भोक्ता अथवा देह-क्रियाओं के कर्ता के रूप में स्थित नहीं है; वह तो साक्षी, अनुमन्ता और परम भोक्ता है। वह आत्मा से भिन्न 'परम आत्मा' है और माया से परे है। स्पष्ट है कि आत्मा और परमात्मा भिन्न-भिन्न हैं। परमात्मा के हाथ-पैर आदि सर्वव्यापक हैं, जबकि जीवात्मा में इस सामर्थ्य का अत्यन्त अभाव है। वे परमेश्वर हैं; इसलिए अन्तर्यामी रूप से जीव की भोग-वाँछा को अनुमति देते हैं। परमात्मा की अनुमति के बिना जीवात्मा कुछ नहीं कर सकता। जीवात्मा **भुक्त**, अर्थात् पालित है और वे **भर्ता**, अर्थात् पालक हैं। असंख्य जीवों में से प्रत्येक के साथ वे सखा के समान रहते हैं।

यह सत्य है कि जीवात्मा श्रीभगवान् का शाश्वत् भिन्न-अंश है तथा दोनों में प्रगाढ़ सखाभाव है। किन्तु साथ ही, श्रीभगवान् की अनुमति की अवहेलना करते हुए परम शक्तिवती प्रकृति पर अधिकार कर लेने के लिए स्वतन्त्र रूप से कर्म करने की प्रवृत्ति भी जीव में रहती है। इसी प्रवृत्ति के कारण उसे श्रीभगवान् की तटस्था-शक्ति कहा जाता है। भाव यह है कि वह स्वेच्छानुसार दोनों अपरा-परा शक्तियों में से किसी में भी स्थित हो सकता है। जब वह माया (अपराशक्ति) के बन्धन में रहता है, तब भी श्रीभगवान् उसके सखा परमात्मारूप से उसका सहचरण करते हैं, जिससे वह फिर